अब गोपियाँ और श्रीकृष्ण यमुना के तटों की चमकदार रेत पर गए। श्रीकृष्ण कई रूप धारण किए। इस प्रकार हर गोपी के साथ एक श्रीकृष्ण थे। हर गोपी को पहले जैसा ही लगा कि श्रीकृष्ण केवल उसके पास ही है। वे सभी परम सुख का अनुभव कर रही थी। रास की यह दिव्य खुशी भी देवी लक्ष्मी के लिए अनुपलब्ध है जो भगवान विष्णु की शाश्वत पत्नी है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

नृत्य शुरू हुआ। अपनी पत्नियों के साथ सभी स्वर्ग के देवता दिव्य नृत्य देखने के लिए उत्साहित थे। उन्होंने आकाश से फूलों की वृष्टी की। गोपियाँ श्रीकृष्ण के साथ अद्वितीय सुन्दर संगीत की धुनों की धुन पर नृत्य कर रहा थी उनके पायल, करधनी और चूड़ियों से एक सुरीला एवं मधुर संगीत की धुनी सब को मदमस्त कर रही थी। ये धुनी का संगीत तथा वाद्यों का संगीत मिलकर सभी एक और सुंदर संगीत बन गया था। गोपियाँ और श्रीकृष्ण गर्दन, आंखों, हाथों और पैरों मनभावन हावभाव के साथ शानदार ढंग से सुंदर कमनीय मुद्राओं केसाथ नृत्य कर रहे थे, कभी तेज़ तो कभी धीमे। गोपियाँ खूबसूरती से गा रहे थी। कभी-कभी गोपियाँ श्रीकृष्ण के लिए गाती थी तो कभी श्रीकृष्ण गोपियों के लिए गाते थे। आनंद रस की कोई सीमा नहीं थी। वातावरण पर दिव्य उत्साह छा गया था। गोपियों ईश्वरीय सुख का मधुप पान कर मदमत्त हो रही थी। बिजली सी गोपियों के बीच श्रीकृष्ण हल्के में नीले रंग की बादल की तरह सुशोभित हो रहे थे। हर गोपी ने हमेशा यही महसूस किया कि श्रीकृष्ण केवल उसके साथ थे और किसी और के साथ नहीं। नृत्य ब्रह्मा की एक रात तक जारी रहा। (4,29,40,80,000 वर्ष) इस अवधि के दौरान पूरे ब्रह्मांड को श्रीकृष्ण के योगमया की दिव्य शक्ति से सुला दिया था। नृत्य के बाद श्रीकृष्ण यमुना के पानी में गोपियों के साथ गए और सभी ने उन सभी खेलों का आनंद लिया जिसमें श्रीकृष्ण और गोपी ने एक-दूसरे को हाथ से पानी फेंक।

परमहंस शुकदेव रास का वर्णन कर रहे थे जैसा कि पहले कभी

नहीं किया गया था। लेकिन परीक्षित ने, जो इस वर्णन को सुन रहा था, एक प्रश्न पूछा।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

"श्रीकृष्ण खुद भगवान थे। वह धर्म की रक्षा और पुनर्स्थापना करने के लिए पृथ्वी पर आये थे। फिर यह कैसे है कि श्रीकृष्ण ने दूसरों की पत्नियों के साथ नृत्य किया जो धार्मिक सिद्धांतों के खिलाफ है? श्रीकृष्ण आत्माराम है मसलब अकेले ही अनंत सुख का अनुभव करते है। उनको औरों से किसी भी तरह का आनंद नहीं चाहिए। फिर उन्होंने परस्त्रियों के साथ नृत्य क्यों किया? "

शुकदेव एहसास हुआ कि परीक्षित बस मुक्ति चाहते है। वह ईश्वर के कार्यों से जुड़ी दिव्यता को समझने में सक्षम नहीं होंगे और वह आगे के इस दिव्य खेल को सुनने के लिए योग्य नहीं है। उन्होंने अचानक रास के विवरण को समाप्त कर दिया। लेकिन इससे पहले उन्होंने परीक्षित के सवाल का जवाब दिया।